पुण्ना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-VI

Hindi

Specimen copy

Year- 2021-22

Month-August-Sept

अनुक्रमणिका

क्रम नंबर	महिना	पाठ / कविता का नाम
1	अगस्त	**कविता -7=साथी हाथ बढ़ाना** व्याकरण = विशेषण लेखन = पत्र लेखन **पाठ -8= ऐसे -ऐसे** व्याकरण = उपसर्ग ,प्रत्यय लेखन = चित्र वर्णन बाल रामायण – पाठ -6
2	सितम्बर	**पाठ – 9 टिकट एल्बम** व्याकरण – अनेक शब्दो के लिए एक शब्द लेखन = कहानी लेखन

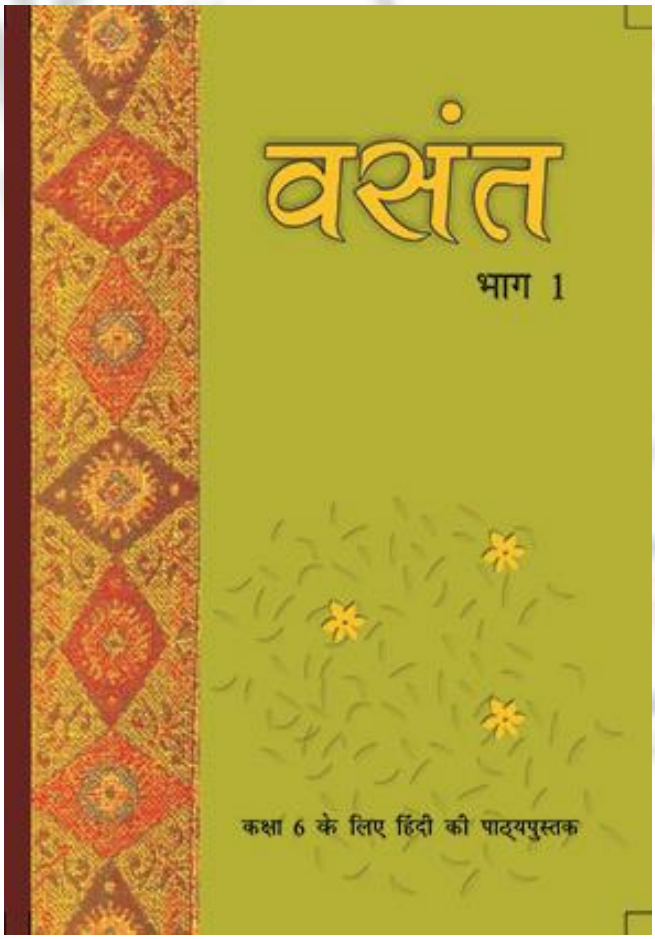

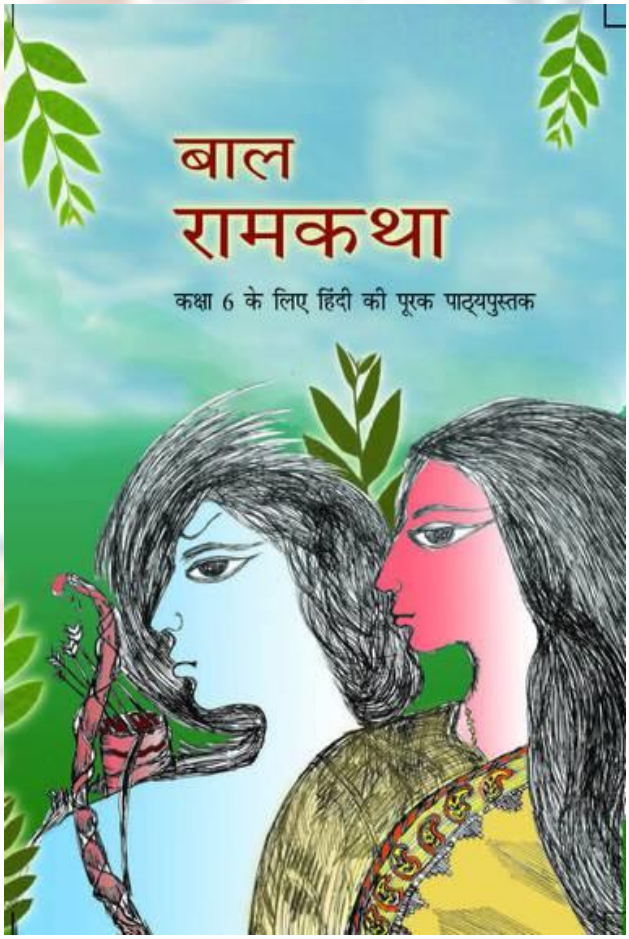

कविता -7 साथी हाथ बढ़ाना
(कवि – साहिर लुधियानवी)

➢ कविता का सार

यह गीत देशवासियों को संबोधित है। साथी हाथ बढ़ाना वाक्य का संकेत है-मिलकर कार्य करना। इस गीत का आशय यह है कि हमें आपस में मिल-जुलकर काम करना चाहिए। अकेला व्यक्ति काम करते-करते थक भी सकता है। संगठन और शक्ति के सामने बड़ी-बड़ी बाधाएँ दूर हो जाती हैं। मिल-जुलकर मेहनत करने से भाग्य भी बदल सकते हैं। बिना किसी के सहयोग के अकेले आगे बढ़ना कठिन कार्य है। जीवन में हर पल पर हमें किसी न किसी के मदद की आवश्यकता होती है। इसका समाधान हमारे जीवन में कई लोगों के सहयोग एवं मार्गदर्शन से होता है। अतः बिना सहयोग के आगे बढ़ना असंभव-सा लगता है। इस गीत से हमें प्रेरणा मिलती है कि हमें प्रत्येक कार्य मिल-जुलकर करना चाहिए, परिश्रम से कभी घबराना नहीं चाहिए। और सभी के सुख-दुख में सहयोग देना चाहिए। यह कविता हमें एकता और संगठन की शक्ति के बारे में भी बताती है।

➢ नए शब्द

1) फौलादी
2) नेक
3) सीस
4) गैरों
5) इंसा
6) लेख

➢ शब्दार्थ

1) परतब – पर्वत
2) सीस – शीश
3) फौलादी – मजबूत
4) लेख – भाग्य का लिखा
5) गैरों – दूसरों
6) मंज़िले – ध्येय , लक्ष्य स
7) नेक – भला
8) कतरा – बूँद
9) जरा – कण
10) इंसा – आदमी , इंसान

➢ बहुविकल्पी प्रश्न

(क) 'साथी हाथ बढ़ाना' गीत के गीतकार कौन हैं?

(i) विष्णु प्रभाकर (ii) दिलीप एम. साल्वी

(iii) साहिर लुधियानवी (iv) सुमित्रानंदन पंत

(ख) किसके सहारे इंसान अपना भाग्य बना सकता है-

(i) धन के (ii) खेल के

(iii) मेहनत के (iv) किस्मत के

(ग) गीतकार कहाँ राहें पैदा करने की बात कह रहा है?

(i) समुद्र में (ii) हवा में

(iii) वन में **(iv) चट्टानों में**

(घ) राई का पर्वत कैसे बनता है?

(i) एक से एक मिलते चले जाने पर (ii) खेत में पैदा होने पर

(iii) व्यापारियों द्वारा खरीदे जाने पर (iv) वर्षा होने पर साथी हाथ बढ़ाना

(ङ) हमारी मंज़िल क्या है?

(i) सत्य (ii) झूठ

(iii) छल (iv) फरेब

➢ अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. यह गीत किसको संबोधित है?

उत्तर- यह गीत देशवासियों को संबोधित है।

प्रश्न 2. 'साथी हाथ बढ़ाना' वाक्य किस ओर संकेत करता है?

उत्तर- साथी हाथ बढ़ाना वाक्य का संकेत है-मिलकर कार्य करना।

प्रश्न 3. इंसान चाहे तो क्या कर सकता है?

उत्तर- इंसान चाहे तो चट्टानों में भी रास्ता निकाल सकता है।

प्रश्न 4. "गैरों' के लिए हमने क्या किया है?

उत्तर- 'गैरों' के लिए हमने अपनी सुख-सुविधाओं की परवाह न करके उनके कार्यों को पूरा किया है।

प्रश्न 5. हमारा लक्ष्य क्या है?

उत्तर- हमारा लक्ष्य सत्य की प्राप्ति है। हमें मिल-जुलकर उन्नति के रास्ते पर चलना चाहिए।

➢ लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. इस गीत का आशय क्या है?

उत्तर- इस गीत का आशय यह है कि हमें आपस में मिल-जुलकर काम करना चाहिए। अकेला व्यक्ति काम करते करते थक भी सकता है। संगठन और शक्ति के सामने बड़ी-बड़ी बाधाएँ दूर हो जाती हैं। मिल-जुलकर मेहनत करने से भाग्य भी बदल सकते हैं।

प्रश्न 2. क्या बिना सहयोग के आगे बढ़ा जा सकता है?

उत्तर- बिना किसी के सहयोग के अकेले आगे बढ़ना कठिन कार्य है। जीवन में हर पल पर हमें किसी न किसी के मदद की आवश्यकता होती है। इसका समाधान हमारे जीवन में कई लोगों के सहयोग एवं मार्गदर्शन से होता है। अतः बिना सहयोग के आगे बढ़ना असंभव-सा लगता है।

प्रश्न 3. इस गीत से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर- इस गीत से हमें प्रेरणा मिलती है कि हमें प्रत्येक कार्य मिल-जुलकर करना चाहिए, परिश्रम से कभी घबरान नहीं चाहिए। और सभी के सुख-दुख में सहयोग देना चाहिए। यह कविता हमें एकता और संगठन की शक्ति के बारे में भी बताती है।

➢ दीर्घ प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

1) सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया'-साहिर ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर- साहिर ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि एक साथ मिलकर काम करने से बड़ी से बड़ी बाधाओं में भी रास्ता निकल आता है, यानी काम आसान हो जाता है। साहसी व्यक्ति सभी बाधाओं पर आसानी से विजय पा लेता है क्योंकि एकता और संगठन में शक्ति होती है जिसके बल पर वह पर्वत और सागर को भी पार कर लेता है।

2) गीत में सीने और बाँहों को फ़ौलादी क्यों कहा गया है?

उत्तर- सीने और बाँह को फ़ौलादी इसलिए कहा गया है क्योंकि हमारे इरादे मजबूत हैं। हमारे बाजुओं में आपार शक्ति है। हम ताकतवर हैं। हम बलवान हैं। हमारी बाँहें फ़ौलादी इसलिए भी हैं कि इसमें असीम कार्य क्षमता का पता चलता है। हमारी बाजुएँ काफ़ी शक्तिशाली भी हैं।

व्याकरण

विशेषण

➢ **विशेषण -** जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता गुण,संख्या, मात्रा या परिणाम आदि बताए उसे विशेषण कहते हैं|

विशेषण के चार प्रकार होते हैं-

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण- "जो शब्द, किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष, रंग, आकार, अवस्था, स्थिति, स्वभाव, दशा, दिशा, स्पर्श, गंध, स्वाद आदि का बोध कराए, 'गुणवाचक विशेषण' कहलाते हैं।"

जैसे- 1. बगीचे में सुंदर फूल हैं।
2. धरमपुर स्वच्छ नगर है।
3. स्वर्गवाहिनी गंदी नदी है।
4. स्वस्थ बच्चे खेल रहे हैं।

2. संख्यावाचक विशेषण- "वह विशेषण, जो अपने विशेष्यों की निश्चित या अनिश्चित संख्याओं का बोध कराए, 'संख्यावाचक विशेषण' कहलाता है।"

जैसे-
1. कक्षा में चालीस विद्यार्थी उपस्थित हैं।
2. दोनों भाइयों में बड़ा प्रेम हैं।
3. उनकी दूसरी लड़की की शादी है।
4. देश का हरेक बालक वीर है।

3. परिमाणवाचक विशेषण- "वह विशेषण जो अपने विशेष्यों की निश्चित अथवा अनिश्चित मात्रा (परिमाण) का बोध कराए, 'परिमाणवाचक विशेषण' कहलाता है।"

जैसे-
1. मुझे दो मीटर
2. उसे एक किलो चीनी चाहिए।
3. बीमार को थोड़ा पानी देना चाहिए।

4. सार्वनामिक विशेषण- जब कोई सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्द से पहले आए तथा वह विशेषण शब्द की तरह संज्ञा की विशेषता बताये, उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

जैसे-

1. वह आदमी व्यवहार से कुशल है।
2. कौन छात्र मेरा काम करेगा।

लेखन – विभाग

पत्र लेखन

- **अपने मुहल्ले के पोस्टमैन की कार्यशैली का वर्णन करते हुए पोस्टमास्टर को शिकायती पत्र लिखिए।**

15, दूंगाधारा,
अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)।
दिनांक 13-4-2021
सेवा में,
पोस्ट मास्टर,
उप-डाकघर पोखर खाली, अल्मोड़ा।
महोदय,
मैं आपका ध्यान मुहल्ला दूंगाधारा के पोस्टमैन की कर्तव्य-विमुखता की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इस मुहल्ले के निवासियों की शिकायत है कि यहाँ डाक कभी भी समय से नहीं बँटती है। अतः यहाँ के निवासियों को बड़ी असुविधा है। आपसे निवेदन है कि इस मामले की जानकारी प्राप्त करके उचित कार्यवाही करने की कृपा करें, ताकि इस समस्या का निराकरण हो सके।
सधन्यवाद!
भवदीय

- **गतिविधि** - साथी हाथ बढ़ाना गीत का चित्र बनाए अथवा लगाए |

पाठ – 8 ऐसे – ऐसे
(लेखक – श्री विष्णु प्रभाकर)

➢ पाठ का सार

प्रस्तुत एकांकी विष्णु प्रभाकर जी की रचना है। इस एकांकी के माध्यम से उन्होंने बताया है कि जब बच्चों का विद्यालय का कार्य पूरा नहीं होता तो वह कैसे-कैसे बहाने करते हैं। इस एकांकी में एक बच्चा काम पूरा न होने पर पेट दर्द का बहाना करता है। डॉक्टर, वैद्य सभी उसको देखने आते हैं। अपनी-अपनी राय बता कर चले जाते हैं। अंत में अध्यापक आकर उसकी बीमारी को पकड़ता है।

➢ नए शब्द

1) अट्टहास
2) गुलजार
3) रूआँसा
4) छकाना
5) चकित
6) छका देना

➢ शब्दार्थ

1) अंट- शंट = ऐसी वैसी
2) चकित = हैरान
3) रूआँसा = रोनी सूरतवाला
4) गुलजार = रोशन
5) बला = मुसीबत
6) भला – चंगा = ठीक -ठाक
7) धमा – चौकड़ी = उछल -कूद
8) छका देना = परेशान करना
9) अट्टहास = ज़ोर की हँसी
10) छकाना = मूर्ख बनाना

➢ बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

(क) 'ऐसे-ऐसे' एकांकी के लेखक कौन हैं?

(i) जयंत विष्णु
(ii) विष्णु प्रभाकर
(iii) गुणाकर मुले
(iv) अनुबंधोपाध्याय

(ख) मोहन ने पिता के दफ़्तर में क्या खाया था?

(i) बर्गर (ii) समोसे

(iii) फल (iv) मिठाई

(ग) किन बहानों को मास्टर जी समझ जाते हैं?

(i) पेट दर्द (ii) सिर दर्द

(iii) चक्कर आना **(iv) उपर्युक्त सभी**

(घ) वैद्य जी को बुलाकर कौन लाया?

(i) मोहन की माँ (ii) मोहन के पिता

(iii) दीनानाथ (iv) मोहन का मित्र

(ङ) मोहन कैसा लड़का था?

(i) कमज़ोर (ii) कम बुद्धिवाला

(iii) भला **(iv) शरारती**

➢ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मोहन ने पिता के दफ़्तर में क्या खाया था?

उत्तर- मोहन ने पिता के दफ़्तर में एक केला और एक संतरा खाया था।

प्रश्न 2. वैद्य जी को बुलाकर कौन लाया?

उत्तर- मोहन के पड़ोसी वैद्य जी को बुलाकर लाए थे।

प्रश्न 3. वैद्य जी ने मोहन को देखने के बाद क्या कहा?

उत्तर- वैद्य जी मोहन को देखकर कहते हैं कि घबराने की कोई बात नहीं। मामूली बात है, पर इससे कभी-कभी बड़े भी तंग आ जाते हैं।

प्रश्न 4. मोहन ने क्या बहाना बनाया?

उत्तर- मोहन ने स्कूल न जाने के लिए बहाना बनाया कि उसके पेट में ऐसे-ऐसे' दर्द हो रहा है।

प्रश्न 5. क्या मोहन के पेट में सचमुच दर्द था?

उत्तर- नहीं, मोहन के पेट में कोई दर्द नहीं था। वह केवल बहाना कर रहा था।

➢ लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मोहन की हालत देख माँ क्यों अधिक परेशान थी?

उत्तर- मोहन की हालत देखकर मोहन की माँ ने मोहन को हींग, चूरन, पिपरमेंट आदि दिया था, पर मोहन ठीक नहीं हुआ था। वह बार-बार कहता था कि उसके पेट में ऐसे-ऐसे हो रहा है। माँ उसकी हालत देखकर परेशान थी क्योंकि मोहन को क्या हो रहा है, यह पता नहीं चल रहा था। उसने 'ऐसे-ऐसे' की बीमारी का नाम न सुना था। वह सोच में पड़ गई थी कि उसे कोई नई बीमारी तो नहीं हो गई है इसीलिए वह मोहन की हालत देखकर परेशान थी।

प्रश्न 2. मोहन की माँ क्यों कहती है-हँसी की हँसी, दुख का दुख?

उत्तर- मोहन की माँ बार-बार मोहन से उसके पेट-दर्द के बारे में पूछती है। वह बस यही कहता है कि पेट में ऐसे-ऐसे' हो रहा है। उसकी बात सुनकर माँ हँस पड़ती है और परेशान भी होती है। वह बेटे के दुख से दुखी होती है। इसी | मनः स्थिति में वह कहती है की हँसी की हँसी दुख का दुख। यह उसे अजीब बीमारी लगती है।

प्रश्न 3. ऐसे कौन-कौन से बहाने होते हैं जिन्हें मास्टर जी एक ही बार में सुनकर समझ जाते हैं?

उत्तर- ऐसे अनेक बहाने होते हैं; जैसे-आज स्कूल में कुछ नहीं होगा, बस सफ़ाई कराई जाएगी। कुछ छात्र कहते हैं कि मैं रात में पढ़ाई कर रहा था मेरी किताब और कॉपी वहीं छूट गई। कभी-कभी छात्र दूर के रिश्तेदार की बीमारी का बहाना बना लेते हैं। इसके अलावे छात्र पेट दर्द, सिर दर्द, माता-पिता के साथ कहीं जाना, जिन्हें एक ही बार सुनकर मास्टर जी समझ जाते हैं।

प्रश्न 4. वैद्य जी मोहन को क्या बीमारी बताते हैं? वह उसे क्या दवा देते हैं?

उत्तर- वैद्य जी मोहन के पेट-दर्द का कारण बताते हैं वात का प्रकोप है, कब्ज़ है। पेट साफ़ नहीं हुआ है। मल रुक जाने से वायु बढ़ गई है। वह मोहन को दवा की पुड़िया हर आधे-आधे घंटे बाद गरम पानी से लेने को कहते हैं।

प्रश्न 5. डॉक्टर मोहने को क्या बीमारी बताते हैं और ठीक होने का क्या आश्वासन देते हैं?

उत्तर- डॉक्टर मोहन की जीभ देखकर कहते हैं कि उसे कब्ज़ और बदहजमी है। फिर वह बताते हैं कि कभी-कभी हवा रु क जाती है और फंदा डाल लेती है। मोहन के पेट में बस उसी का ऐंठन है। वह मोहन को आश्वासन देते हैं कि दवा की एक खुराक पी लेने के बाद तबियत ठीक हो जाएगी।

व्याकरण
उपसर्ग और प्रत्यय

➢ उपसर्ग-

उपसर्ग में हम किसी मूल शब्द के आगे शब्दांश जोड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं । उपसर्ग शब्द का निर्माण उप और सर्ग के मिलने से हुआ है ।उप का अर्थ जहां आगे होता है वही सर्ग का मतलब होता है, जोड़ना इस प्रकार उपसर्ग की सबसे अर्थवान परिभाषा हुई," उपसर्ग वह शब्दांश है जो किसी शब्द के आगे लगकर नए नए शब्दों का निर्माण करता है।"

अति –अतिरिक्त, अतिशय, अतिशयोक्ति
अनु – अनुभव, अनुसार,अनुचर, अनुग्रह
निस् – निस्वार्थ, निष्कर्ष निष्पक्ष
परि – परिस्थिति, परिवार, परिहास
हम – हमसफ़र, हमशक्ल, हमदर्द
हर – हरअजीज , हरवक्त, हरदम
खुश –खुशफहमी, खुशदिल, खुशमिजाज
ला – लानत, लाचार, लाइलाज

➢ प्रत्यय-

प्रति और अवयव के मिलने से बना शब्द प्रत्यय- कहलाता है। वह शब्दांश जो किसी शब्द के पीछे लग कर एक नए शब्द का निर्माण करता है प्रत्यय कहलाता है। जैसे पूजा में पा लगता है तो पुजापा बन जाता है।

आवट – मिलावट,लिखावट,बसावट, बनावट
आहट – फुसफुसाहट,मरमराहट, घबराहट। छटपटाहट
आया – बनाया, सुनाया, बहलाया, खिलाया
आक – छपाक,तपाक,चटाक, मजाक
आऊ – लडाऊ,गिराऊ,बुझाऊ,घुमाऊ
इमा – गरिमा, लघिमा
नाक – खतरनाक, दर्दनाक
दान – दीपदान, अंगदान, पिंडदान
कार – कलाकार चित्रकार पत्रकार, कुंभकार

लेखन -विभाग
चित्र वर्णन

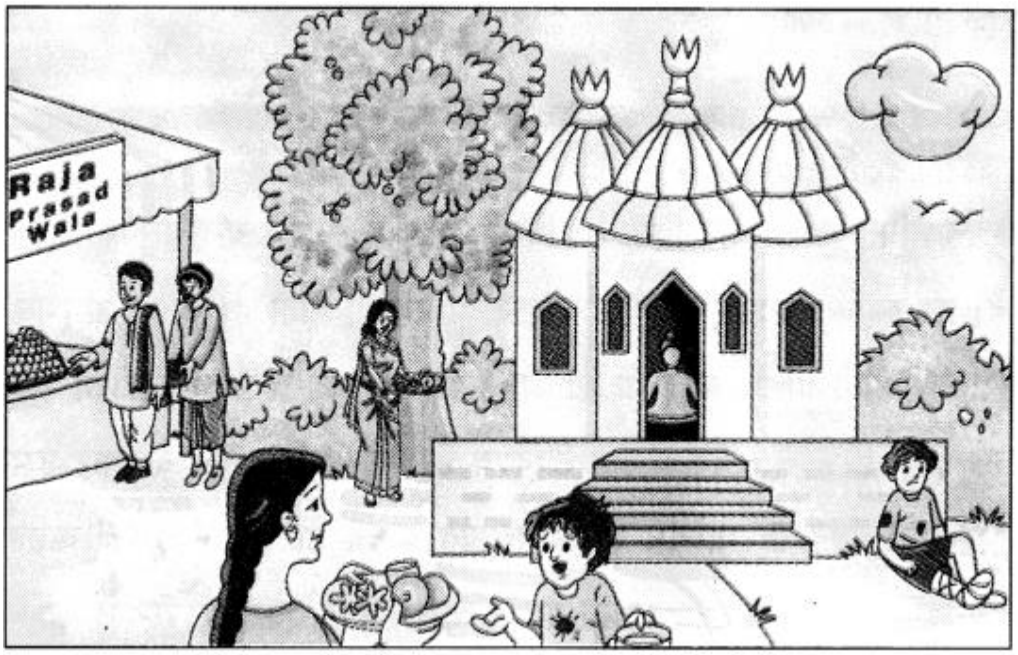

प्रस्तुत चित्र मंदिर का है। मंदिर एक ऐसा स्थान है, जहाँ व्यक्ति श्रद्धाभाव से जाता है और अपने इष्टदेव की पूजा करके मानसिक शांति पाता है। अतः प्रातः काल सभी लोग मंदिर जाते हैं। इस चित्र में एक महिला हाथ में पूजा की थाली लिए मंदिर जा रही है। हिंदू धर्म में वृक्ष की पूजा का विधान है इसलिए प्रत्येक मंदिर के बाहर पीपल या केला का पेड़ एवं तुलसी का पौधा होता है। इस चित्र में भी एक वृक्ष है जिसके सामने खड़े होकर एक महिला पूजा कर रही है। एक बच्चा पूजा के लिए जाती हुई महिला से भिक्षा माँग रहा है उसके एक हाथ में पात्र है और उसने दूसरा हाथ भिक्षा के लिए फैला रखा है। सीढ़ियों के पास एक बच्चा बैठा है, जो कि अपाहिज है। वह मंदिर में आने वाले भक्तों से दया की भीख चाहता है।

- **गतिविधि-** ऐसे ऐसे पाठ आधारित चित्र बनाए अथवा लगाए |

बाल रामायण
पाठ -6 दंडक वन में दस वर्ष

प्रश्न-1 चित्रकूट और अयोध्या में कितनी दूरी थी?
उत्तर- चित्रकूट अयोध्या से चार दिन की दूरी पर था ।
प्रश्न-2 राक्षस ऋषि मुनियों को किस प्रकार कष्ट देते थे?
उत्तर - राक्षस ऋषि मुनियों के अनुष्ठानों में विघ्न डालकर कष्ट देते थे ।
प्रश्न-3 सीता की दैत्यों के सहांर के संबंध में क्या सोच थी?
उत्तर - सीता चाहती थीं कि राम अकारण राक्षसों का वध न करें । उन्हें न मारें जिन्होंने उनका कोई अहित नहीं किया है ।
प्रश्न-4 कौन से मुनि ने राम को राक्षसों की अत्याचार की कहानी सुनाई?
उत्तर - सुतीक्ष्ण मुनि ने राम को राक्षसों की अत्याचार की कहानी सुनाई ।
प्रश्न-5 कौन विंध्यांचल पार करने वाले पहले ऋषि थे?
उत्तर - अगस्त्य ऋषि विंध्यांचल पार करने वाले पहले ऋषि थे ।
प्रश्न-6 पंचवटी के मार्ग पर राम को कौन सा प्राणी मिला?
उत्तर - पंचवटी के मार्ग पर राम को विशालकाय गिद्ध, जटायु मिला ।
प्रश्न-7 लक्ष्मण ने जटायु को क्या समझा?
उत्तर - लक्ष्मण ने जटायु को मायावी राक्षस समझा ।
प्रश्न-8 सीता को पकड़ने वाले राक्षस का क्या नाम था?
उत्तर - सीता को पकड़ने वाले राक्षस का नाम विराध था ।
प्रश्न-9 मायावी मारीच ने किसका रूप धारण किया?
उत्तर - मायावी मारीच ने हिरण का रूप धारण किया ।
प्रश्न-10 शूर्पणखा ने अपना क्या परिचय दिया?
उत्तर- शूर्पणखा ने बताया कि वह रावण और कुंभकर्ण की बहन है और अविवाहित है ।
प्रश्न-11 किस राक्षस ने रावण को युद्ध का पूरा विवरण बताया?
उत्तर - अकंपन नाम के राक्षस ने रावण को युद्ध का पूरा विवरण बताया ।
प्रश्न-12 रावण ने किसका रूप धारण किया?
उत्तर - रावण ने तपस्वी का रूप धारण किया ।

पाठ -9 टिकिट एल्बम
(लेखक – सुंदरा रामस्वमी)

➢ पाठ का सार

कक्षा में बस एक राजप्पा ही था, जिसे टिकट इकट्ठा करने की धुन थी। वह एक-एक टिकट इकट्ठा करने के लिए मित्रों के घर के कई चक्कर लगाता था | लेकिन बाकी छात्र इतना परिश्रम नहीं करना चाहते थे। इसको बनाने में काफ़ी परिश्रम, समय और रुपए खर्च भी करना पड़ता था। बाकी छात्र दूसरों के अलबम को देखकर खुश हो जाते थे। कक्षा में राजप्पा ही ऐसा छात्र था जो बड़े मेहनत के साथ टिकटें जमा करता था। सभी विद्यार्थियों को नया काम करने का शौक नहीं होता। वे अधिक परिश्रम नहीं करना चाहते। वे दूसरों की वस्तुओं को देखकर ही खुश हो जाते हैं।राजप्पा के पास अलबम था। उस अलबम के कारण उसे लड़के घेरे रहते थे, पर अब नागराजन के मामा ने उसे सिंगापुर से एक अलबम भेजा था। उस अलबम के कारण नागराजन को सभी घेरे रहते और राजप्पा को कोई नहीं पूछता था। इस कहानी का अंत राजप्पा के फूट-फूटकर रोने से होता है।

➢ नए शब्द

1) जमघट
2) उत्सुक
3) दराज
4) पगडंडियो
5) पुष्ठ
6) अंगीठी

➢ शब्दार्थ

1) जमघट – समूह
2) उत्सुक – बैचेन
3) अगुआ – दूसरों के आगे चलनेवाला
4) पगडंडियो – पतला रास्ता
5) पुष्ठ – पेज़ , पन्ना
6) दराज – कबाट
7) अंगीठी – मिट्टी या लोहे का बना चूल्हा

➢ बहुविकल्पी प्रश्नोत्तर

(क) 'टिकट-अलबम' पाठ के लेखक कौन हैं?

(i) सुंदरा रामस्वामी (ii) भगवत शरण उपाध्याय

(iii) जया विवेक (iv) अनुबंधोपाध्याय

(ख) नागराजन को अलबम किसने भिजवाया था?

(i) उसके ताऊ ने (ii) उसके चाचा ने

(iii) उसके मामा जी ने (iv) उसके दादा जी ने

(ग) नागराजन को लड़के क्यों घेरे रहते थे?

(i) वह अच्छे-अच्छे चुटकुले सुनाता था।

(ii) उसके पास सुंदर खिलौने थे।

(iii) उसके पास काफ़ी मिठाई थी।

(iv) उसके पास टिकट-अलबम था।

(घ) नागराजन के मामा कहाँ रहते थे?

(i) सिंगापुर (ii) त्रिवेंद्रम

(iii) तिरुचिरा पल्ली (iv) चेन्नई।

(ङ) नागराजन का अलबम किसने चुराया?

(i) पार्वती ने (ii) उसके मित्र ने

(iii) राजप्पा ने (iv) किसी पड़ोसी ने।

➢ अतिलघु उत्तरीय प्रशनोत्तर

प्रश्न 1. आजकल लड़के किसे घेरे रहते थे और क्यों?

उत्तर- आजकल नागराजन को घेरे रहते थे क्योंकि उसके पास बढिया अलबम था।

प्रश्न 2. अब किसके अलबम की पूछ नहीं रह गई थी?

उत्तर- अब राजप्पा के अलबम की पूछ लड़कों में नहीं रह गई थी।

प्रश्न 3. लड़कियों ने नागराजन से अलबम किसे माँगने भेजा और क्यों?

उत्तर- लड़कियों ने नागराजन से अलबम माँगने के लिए पार्वती को अपना अगुआ बनाकर भेजा क्योंक वही सबसे तेज़-तर्रार थी।

प्रश्न 4. राजप्पा ने सरपंच के लड़के से क्या कहा?

उत्तर- राजप्पा ने सरपंच के लड़के से कहा-तुम्हारे घर में जो प्यारी बच्ची है उसे तीस रुपए में दोगे।

प्रश्न 5. राजप्पा ने अलबम क्यों छिपा दिया?

उत्तर- राजप्पा ने नागराजन की अलबम चुराई थी, इसलिए वह नहीं चाहता था कि किसी को इसके बारे में कुछ पता चले।

➢ लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. राजप्पा को अब कोई क्यों नहीं पूछता था?

उत्तर- राजप्पा के पास अलबम था। उस अलबम के कारण उसे लड़के घेरे रहते थे, पर अब नागराजन के मामा ने उसे सिंगापुर से एक अलबम भेजा था। उस अलबम के कारण नागराजन को सभी घेरे रहते और राजप्पा को कोई नहीं पूछता था।

प्रश्न 2. नागराजन अपना अलबम सबको कब-कब और कैसे दिखाता था?

उत्तर- नागराजन सुबह की पहली घंटी बजने तक, दोपहर की आधी छुट्टी के समय और शाम को अपने घर पर सबको अलबम दिखाता था। वह अपना अलबम किसी को हाथ नहीं लगाने देता था। उसे अपने गोद में लेकर बैठ जाता, लड़के उसे शाँतिपूर्वक घेरकर खड़े रहते और उसका अलबम खकर खुश होते थे।

प्रश्न 3. राजप्पा के अलबम को किसने, कितने में खरीदना चाहा था? राजप्पा ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर- स्कूल भर में राजप्पा का अलबम सबसे बड़ा और सुंदर था। सरपंच के लड़के ने उसके अलबम को खरीदना चाहा था। पर राजप्पा नहीं माना। राजप्पा ने उसे घमंडी कहा और फिर उसने उससे कहा, क्या तुम अपने घर की प्यारी बच्ची को तीस रुपए में बेच सकते हो? इस बात को सुनकर सारे बच्चे ठहाका मारकर हँस पड़े।

व्याकरण

अनेक शब्दों के एक शब्द :

हिंदी शब्दों में अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कर सकते हैं। अथार्त हिंदी भाषा में कई शब्दों की जगह पर एक शब्द बोलकर भाषा को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। हिंदी भाषा में अनेक शब्दों में एक शब्द का प्रयोग करने से वाक्य के भाव को पता लगाया जा सकता है।

इतिहास से संबंध रखने वाला – ऐतिहासिक
एक सप्ताह में होने वाला– साप्ताहिक
ऋषियों के रहने का स्थान – आश्रम
कठिनता से प्राप्त होने वाला – दुर्लभ
किसी से भी न डरना वाला – निडर
किसी प्राणी को न मारना – अहिंसा
जिस स्त्री का पति जीवित हो – सधवा
जिसकी कोई सीमा न हो – असीम
जहाँ लोगों का मिलन हो – सम्मेलन
जिसके आने की तिथि न हो – अतिथि
जो आँखों के सामने न हो – परोक्ष
वन में रहने वाला मनुष्य– वनवासी
तेज़ गति से चलने वाला – द्रुतगामी
जिसका कोई कारण न हो – अकारण

लेखन विभाग

कहानी लेखन

संकेत - (आश्रम, नटखट शिष्य, दीवार फाँदना, उसके गुरुजी यह बात जानते थे, दीवार पर सीढ़ी लगी दिखाई दी, नीचे उतरने में मदद, गुरुजी के प्रेमपूर्ण वचन, गलती के लिए क्षमा)

सबक

एक समय की बात है। एक आश्रम में रवि नाम का एक शिष्य रहता था। वद बहुत अधिक नटखट था। वह प्रत्येक रात आश्रम की दीवार फाँदकर बाहर जाता था परन्तु उसके बाहर जाने की बात कोई नहीं जानता था।सुबह होने से पहले लौट आया। वह सोचता था कि उसके आश्रम से घूमने की बात कोई नहीं जानता लेकिन उसके गुरुजी यह बात जानते थे। वे रवि को रंगे हाथ पकड़ना चाहते थे। एक रात हमेशा की तरह रवि सीढ़ी पर चढ़ा और दीवार फॉदकर बाहर कूद गया।उसके जाते ही गुरुजी जाग गए। तब उन्हें दीवार पर सीढ़ी लगी दिखाई दी। कुछ घंटे बाद रवि लौट आया और अंधेरे में दीवार पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। उस वक्त उसके गुरुजी सीढ़ी के पास ही खड़े थे। उन्होंने रवि की नीचे उतरने में मदद की और बोले, "बेटा, रात में जब तुम बाहर जाते हो तो तुम्हें

अपने साथ एक गर्म साल अवश्य रखनी चाहिए।गुरुजी के प्रेमपूर्ण वचनों का रवि पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने अपनी गलती के लिए क्षमा माँगी। साथ ही उसने गुरु को ऐसी गलती दोबारा न करने का वचन भी दिया।
शिक्षा - प्रेमपूर्ण वचनों का सबक जिंदगी भर याद रहता है।

- गतिविधि - डाक टिकिट एकत्र करके लगाए |